नहेमायाह

1 बीसवें वर्ष के किसलेव नाम महीने में,
जब मैं शूशन नाम राजगढ़ में रहता था,
2 तब हनानी नाम मेरा एक भाई और यहूदा
से तमाम आदमी आए। तब मैंने उनसे उन
शेष यहूदियों के बारे में जो गुलामी से निकल
आए थे, यरूशलेम के बारे में सवाल किए।
3 उन लोगों ने मुझे जवाब दिया कि बन्धुआई
से बचे हुए लोग उस प्रान्त में रहते हैं, उनकी
हालत बुरी है और उनकी बदनामी हो रही
है। इसका कारण यह है कि यरूशलेम की
शहरपनाह टूटी हुई है और उसके फाटक
जले हुए हैं। 4 इन बातों को सुनने के बाद
मैं बहुत रोने लगा और काफी दिनों तक गम
में रहा। मैं उपवास के साथ प्रार्थना भी करता
रहा। 5 हे स्वर्ग के परमेश्वर याहवे, हे महान
और अद्वितीय ईश्वर, आप जो अपने प्रेम रखने
वाले और आज्ञा मानने वालों के साथ अपनी
कही बातों को पूरा करते और करुणा करते
हैं, 6 आप ध्यान से सुनिए और देखिए, कि
जो प्रार्थना मैं आपका दास इस वक्त आपके
दास इस्राएलियों के लिए दिन रात करता रहा
हूँ, उसे सुनिए। जो अपराध इस्राएलियों ने
किए हैं, मैं मानता हूँ कि मैंने किए हैं, मैंने
और मेरे पिता के परिवार ने अपराध किए हैं।
7 हमने आपके सामने बहुत बड़ी बुराई की
है और जो आज्ञाएँ मूसा के द्वारा आपने हमें
दी थी, उन्हें हमने नहीं मानी। 8 उस बात पर
ध्यान दें, जो आपने मूसा से कहीं थी, कि यदि
आपके लोग दगाबाज़ी करेंगे, तो आप उन्हें
अलग-अलग देशों में बिखरा देंगे। 9 लेकिन
यदि आपके लोग आपकी ओर मुड़ेंगे और
आज्ञाएँ मानोंगे तो चाहे कहीं क्यों न हो, उन्हें
वापस ले आऊँगा। मैं उन्हें अपने चुने हुए
स्थान में पहुचाऊँगा। 10 अब वे आपके दास
और आपकी प्रजा के लोग हैं, जिनको आपने
अपनी बड़ी ताकतवर और शक्तिशाली हाथ
से मुक्त किया है। 11 हे प्रभु, अपने दास और
दासों की बिनती सुनिए, जो आपसे डर के
चलते हैं। आज अपने दास को कामयाबी दें
और उस आदमी को उस पर दयालु करें (मैं
राजा का पियाऊ था)।

2 अर्तक्षत्र राजा के बीसवें साल के
नीसान नाम महीने में, जब उसके सामने
दाखमधु था, तब मैंने दाखमधु राजा को
दिया। इससे पहले मैं उसके सामने कभी
मायूस न हुआ था। 2 तब राजा ने मुझसे
सवाल किया, तुम बीमार तो नहीं हो, फिर
तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ क्यों हैं? यह तो
मन ही की उदासी होगी। 3 तब मुझे बड़ा डर
लगा और राजा से कहा, 'राजा, हमेशा जीते
रहो!' जब वह नगर जिस में मेरे पुरखाओं की
कब्रें हैं, उजाड़ पड़ा है, फाटक जले हैं, तो
मैं उदास क्यों न होऊँ। 4 राजा ने मुझसे प्रश्न
किया, "तुम क्या माँग रहे हो?" तब मैंने स्वर्ग
के परमेश्वर से प्रार्थना की और राजा से कहा;
5 "यदि राजा को पसन्द आए और मुझसे
खुश हो, तो मुझे यहूदा और मेरे पूर्वजों की
कब्रों के नगर को भेजें, ताकि मैं उसे बनाऊँ।
6 जब राजा रानी साथ बैठे हुए थे, राजा ने
सवाल किया, "तुम्हें कितने दिन सफ़र में
रहना होगा और तुम लौटोगे कब?" फिर
राजा मुझे भेजने के लिए तैयार हो गया। मैंने
भी एक समय ठहरा लिया। 7 फिर मैंने राजा
से कहा, "यदि राजा राज़ी हो, तो महानद
के पार के अधिपतियों के लिए मुझे चिट्ठियाँ
दी जाएँ कि मैं जब तक यहूदा न पहुँचू, तब

तक वे मुझे अपने देश में से होकर गुज़रने दें।
8 और सरकारी जंगल के रखवाले आसाप के
लिए मुझे चिट्ठी दी जाए, ताकि वह मुझे भवन
से लगे हुए राजगढ़ की कड़ियों के लिए और
शहरपनाह के और उस घर के लिए, जिस में
जाकर मैं रहूँगा, लकड़ी दे। मेरे परमेश्वर की
कृपा मुझ पर थी इसलिए राजा ने बिनती को
मंजूर कर लिया। 9 तब मैंने महानद के पार
के अधिपतियों के पास जाकर उन्हें राजा की
चिट्ठियाँ दीं। राजा ने मेरे साथ सेनापति और
सवार भी भेजे थे। 10 यह सुनकर कि एक
आदमी इस्राएलियों के कल्याण की सोच
रहा है, होरोनी सम्बल्लत और तोबिय्याह नाम
कर्मचारी जो अम्मोनी था, उन दोनों को बहुत
खराब लगा। 11 यरूशलेम पहुँचने पर मैं वहाँ
तीन दिन रहा। 12 तब मैं थोड़े पुरुषों को
लेकर रात को किसी को बिना बताए कि
मेरे परमेश्वर ने यरूशलेम की भलाई के लिए
मेरे मन में क्या डाला था, उठा। और अपनी
सवारी के पशु को छोड़ और कोई पशु मेरे
साथ न था। 13 रात में तराई के फाटक में
से होकर मैं निकला और अजगर के सोते
की ओर और कूड़ा फाटक के पास गया,
और यरूशलेम की टूटी पड़ी शहरपनाह और
जले हुए फाटकों को देखा। 14 तब मैं आगे
बढ़कर सोते के फाटक और राजा के कुण्ड
के पास गया, लेकिन मेरी सवारी के जानवर
के लिए आगे जाने की जगह न थी। 15 रात ही
में नाले से होकर शहरपनाह को देखता हुआ
चढ़ गया, फिर घूमकर तराई के फाटक से
अन्दर आया। 16 और गर्वनर जानते थे कि
मैं कहाँ गया और क्या करता था, वरन मैंने
तब तक न तो यहूदियों को कुछ बताया था
और न पुरोहितों, और न रईसों और न गर्वनरों
और न दूसरे काम करने वालों को। 17 तब
मैंने उनसे कहा, “तुम खुद देख रहे हो, कि
हम हमारी हालत कितनी बुरी हो चुकी है,
यरूशलेम उजड़ा हुआ है और फाटक जले
पड़े हैं। इसलिए आओ, हम यरूशलेम की
शहरपनाह को बनाएँ कि आने वाले समय में
हमारी बदनामी न हो।“ 18 फिर मैंने उनको
बतलाया, “परमेश्वर का रहम मुझ पर हुआ
और मुझसे राजा ने क्या-क्या कहा।” तब
वे बोले, “आओ हम कमर बान्धकर निर्माण
काम करें।“ यह करने के लिए उन्होंने साहस
भी किया। 19 यह सुनकर होरोनी सम्बल्लत
और तोबिय्याह नाम कर्मचारी जो अम्मोनी
था, और गेशेम नाम एक अरबी हमें ठट्ठों
में उड़ाने लगे और हमें नीचा जानकर पूछने
लगे कि हम यह क्या कर रहे हैं। 20 “क्या
तुम राजा के खिलाफ़ विद्रोह करोगे?” तब
मैंने जवाब में कहा, “स्वर्ग के परमेश्वर
हमें सफलता देंगे इसलिए हम उनके दास
कमर बान्धकर बनाएँगे, लेकिन यरूशलेम में
तुम्हारा कोई हिस्सा, हक और स्मारक नहीं
है।”

3 तब एल्याशीब मुख्य पुरोहित ने
अपने भाई पुरोहितों के साथ मिलकर
भेड़फाटक को बनाया। उन्होंने उसकी
स्थापना की, और उसके पल्लों को भी
लगाया; और हम्मेआ नामक गुम्मट तक
तथा हननेल के गुम्मट के पास तक उन्होंने
शहरपनाह की स्थापना की। 2 उससे आगे
यरीहो के लोगों ने बनाया। इनसे आगे इम्री
के बेटे जक्कूर ने बनाया। 3 फिर मछली
फाटक को हस्सना के बेटों ने बनाया;
उन्होंने उसकी कड़ियाँ, पल्ले, ताले और बेंड़े
लगाए। 4 और उनसे आगे मरेमोत ने जो
हक्कोस का पोता और ऊरियाह का बेटा था
मरम्मत की। और इनसे आगे मशेजबेल के
पोते, बरेक्याह के बेटे मशुल्लाम ने मरम्मत
की। और इससे आगे बाना के बेटे सादोक

ने मरम्मत का काम किया। 5 और इनसे
आगे तकोइयों ने मरम्मत की; परंतु उनके
रईसों ने अपने प्रभु की सेवा का जुआ
अपनी गर्दन पर न लिया। 6 फिर पुराने
फाटक की मरम्मत पासेह के बेटे योयादा
और बसोदयाह के बेटे मशुल्लाम ने की;
उन्होंने उसकी कड़ियाँ, पल्ले, ताले और बेड़े
लगाए। 7 उनसे आगे गिबोनी मलत्याह और
मेरोनोती यादोन ने और गिबोन और मिस्पा
के लोगों ने महानद के पार के अधिपति के
राजासन की ओर से मरम्मत की। 8 उनसे
आगे हर्हयाह के बेटे उजीएल ने और दूसरे
सुनारों ने मरम्मत का काम किया। इससे
आगे गन्धी हनन्याह ने मरम्मत का काम
किया और उन्होंने चौड़ी शहरपनाह तक
यरूशलेम को मज़बूत किया। 9 उनसे आगे
हूर के बेटे रपायाह ने, जो यरूशलेम के
आधे जिले का गवर्नर था, मरम्मत का
काम किया। 10 उनसे आगे हरुपम के बेटे
यदायाह ने अपने ही घर के आगे मरम्मत
की; इससे आगे हशब्नयाह के बेटे हत्तूश
ने मरम्मत का काम किया। 11 हारीम के
बेटे मल्कियाह और पहत्मोआब के बेटे
हश्शूब ने एक और भाग की, और भट्टों
के गुम्मट की मरम्मत का काम किया।
12 इससे आगे यरूशलेम के आधे जिले
के गवर्नर हल्लोहेश के बेटे शल्लूम ने अपनी
बेटियों के साथ मिलकर मरम्मत का काम
किया। 13 हानून और जानोह में रहने वालों
ने तराई के फाटक की मरम्मत की; उन्होंने
उसको बनाया, और उसके ताले, बेंड़े और
पल्ले लगाए, और हजार हाथ की शहरपनाह
को भी कूड़ाफाटक तक बना दिया।
14 बेथक्केरेम के जिले का गवर्नर रेकाब का
बेटे मल्कियाह ने कूड़ाफाटक की मरम्मत
की, उसीने उसको बनाया, और उसके
ताले, बेंडे और पल्ले लगाए। 15 कोल्होजे
का बेटा शल्लूम मिस्पा के जिले का गवर्नर
था; उसने सोता फाटक की मरम्मत की
और उसको बनाया और पाटा, और उसके
ताले, बेंड़े और पल्ले लगाए। उसने राजा के
बगीचे के पास के शेलह नाम कुण्ड की
शहरपनाह को भी दाऊदपुर से उतरनेवाली
सीढ़ी तक बनाया। 16 बेतसूर के आधे जिले
का गवर्नर अजबूक का बेटा नहेमायाह
था, उसने दाऊद के कब्रिस्तान के आगे
तक और बनाए हुए तालाब तक, और
वीरों के घर तक भी मरम्मत की। 17 इसके
बाद बानी के पुत्र रहूम ने कई लेवियों के
साथ मिलकर मरम्मत का काम किया।
उसके बाद कीला के आधे जिले के गवर्नर
हशब्याह ने अपने जिले की ओर से मरम्मत
का काम किया। 18 उसके बाद कीला के
आधे जिले के गवर्नर हेनादाद के बेटे बव्वै
ने उसके भाईयों साथ मिलकर मरम्मत का
काम किया। 19 येशू का बेटा एज़ेर मिस्पा
का गवर्नर था। उसने शहरपनाह के मोड
के पास शस्त्रागार की चढ़ाई के सामने
आगे वाले भाग की मरम्मत की। 20 फिर
एक और भाग अर्थात उसी मोड़ से लेकर
एल्याशीब मुख्य पुरोहित के घर के दरवाज़े
तक की मरम्मत का काम जब्बै के बेटे
बारूक ने तन मन लगाकर किया। 21 इसके
बाद एक और भाग की अर्थात एल्याशीब
के घर के दरवाज़े से ले उसी घर के सिरे
तक की मरम्मत का काम मरेमोत ने किया।
वह हक्कोस का पोता और ऊरियाह का
बेटा था। 22 उसके बाद उन पुरोहितों ने
मरम्मत का काम किया जो तराई के लोग
थे। 23 उनके बाद बिन्यामीन और हश्शूब ने
अपने घर के सामने मरम्मत का काम किया;
और उनके बाद अजर्याह ने अपने घर के

पास मरम्मत का काम किया। वहमासेयाह
का बेटा और अनन्याह का पोता था। 24 तब
एक और भाग की अर्थात् अजर्याह घर से
लेकर शहरपनाह के मोड़ तक तथा उसके
कोने तक की मरम्मत का काम हेनादाद के
बेटे बिन्नूई ने किया। 25 उसके बाद उसी
मोड़ के सामने जो ऊँचा गुम्मट राजभवन से
बाहर निकला हुआ बंदीगृह के आँगन के
पास है, उसके सामने ऊजै के बेटे पालाल ने
मरम्मत का काम किया। इसके बाद परोश
के बेटे पदायाह ने मरम्मत की। 26 नतीन
लोक ओपेल में पूरब की ओर जलफाटक
के सामने तक और बाहर निकले हुए
गुम्मट तक रहते थे। 27 पदायाह के बाद
तकोइयों ने एक और भाग की मरम्मत
का काम किया। यह भाग बाहर निकले
हुए बड़े गुम्मट के सामने और ओबेल की
शहरपनाह तक है। 28 फिर घोड़ा फाटक
के ऊपर पुरोहितों ने अपने अपने घर के
सामने मरम्मत की। 29 इनके बाद इम्मेर के
बेटे सादोक ने अपने घर के सामने मरम्मत
का काम किया; और फिर पूरबी फाटक
के रखवाले शकन्याह के बेटे समयाह ने
मरम्मत का काम किया। 30 इसके बाद
शेलेम्याह के बेटे हनन्याह और सालाप
के छठवें बेटे हानून ने एक और भाग की
मरम्मत की। उसके बाद बेरेक्याह के बेटे
मषुल्लाम ने अपनी कोठरी के सामने मरम्मत
का काम किया। 31 उसके बाद मल्कियाह
सुनार ने नतिनों और व्यापारियों के स्थान
तक ठहराए हुए स्थान के फाटक के सामने
और कोने के कोठे तक मरम्मत का काम
किया। 32 कोनेवाले कोठे से लेकर भेड़
फाटक तक सोनारों और व्यापारियों ने
मरम्मत के काम को पूरा किया।

4 जब सम्बल्लत को मालूम हुआ कि यहूदी
लोग शहरपनाह को बना रहे हैं तब उसे
यह बात बुरी लगी और गुस्से में आकर
यहूदियों की हँसी उड़ाने लगा। 2 अपने
भाईयों और शोमरोन की फौज से कहने
लगा, “ये कमज़ोर यहूदी चाहते क्या हैं?
क्या वे वह काम अपनी ताकत से करेंगे।
क्या वे अपनी जगह मज़बूत करेंगे? क्या
वे यज्ञ करेंगे? क्या वे सभी काम आज ही
पूरा करेंगे? क्या वे मिट्टी के ढेरों में के जले
हुए पत्थरों को फिर नए सिरे से बनाएँगे?”
3 उसके पास तो अम्मोनी तोबिय्याह था,
और वह उसने कहा, “उनकी बनाई गई
शहरपनाह इतनी कमज़ोर है कि यदि उस पर
गीदड़ भी चढे, तो वह टूट जाएगी। 4 हे हमारे
परमेश्वर सुनिए, हमारी बेईज्ज़ती की जा रही
है। इसे उनके सिर पर ही लौटा दें और गुलामी
के देश में लुटवा दें। 5 उनके अनुचित कामों
पर पर्दा मत डालिए, न ही उनका अपराध
आपके सामने से मिटाया जाए क्योंकि उन्होंने
आपको शहरपनाह बनानेवालों के सामने
गुस्सा दिलाया है। 6 हम लोग शहरपनाह
को आधी ऊँचाई तक ले जा सके हैं।
ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि लोगों ने तन
मन से काम किया। 7 जब सम्बललत और
तोबिय्याह और अरबियों, अम्मोनियों, और
अशदोदियों को मालूम पड़ा, कि यरूशलेम
की शहरपनाह की सुधार का काम किया
जा रहा है और उसमें के नाके बन्द होने
लगे हैं, तब उन्हें बहुत खराब लगा। 8 सभी
लोगों ने एक मन से यह तैयारी की, कि
जाकर यरूशलेम से लड़ें और वहाँ गड़बड़ी
डालें। 9 लेकिन हम लोगों ने अपने परमेश्वर से
बिनती की और उनके डर से उनके खिलाफ़
दिन रात के चौकीदार ठहरा दिए। 10 यहूदियों

ने कहा, “बोझ उठाने वालों की ताकत घट
गई और मिट्टी बहुत पड़ी है। इसलिए हम
शहरपनाह बना न पाएँगे। 11 हमारे दुश्मन
कहने लगे कि जब तक हम उनके बीच
न जाएँ और उन्हें जान से खत्म कर काम
बन्द न करें। तब तक वे कुछ जान न पाएँगे
और देख भी नहीं पाएँगे। 12 फिर जो यहूदी
उनके आसपास रहते थे, उन सब ने सारी
जगहों से दस बार आकर हम लोगों से
कहा, “तुम्हें हमारे पास वापस आ जाना
चाहिए।” 13 इसलिए मैंने लोगों को तलवारें,
बर्छियाँ और धनुष देकर शहरपनाह के पीछे
सब से नीचे की खुली जगहों में घराने-घराने
के अनुसार बैठा दिया। 14 तब मैं देखकर
उठा और रईसों और गर्वनरों ओर दूसरे
सब लोगों से कहा, “उनसे डरो मत, प्रभु
जो महान और आदर तथा आज्ञाकारिता
के लायक है, उसी को याद करके, अपने
भाईयों/बेटों/बेटियों/पतियों और घरों के
लिए युद्ध करना।” 15 जब हमारे दुश्मनों को
मालूम पड़ा कि हम यह जान चुके हैं, और
परमेश्वर ने उनकी चाल को नाकामयाब किया
है, तब हम सब के सब शहरपनाह के पास
अपने अपने काम पर लौट गए। 16 और उस
दिन से मेरे आधे सेवक उस काम में लगे
रहे और आधे बर्छियों, तलवारों, धनुषों और
झिलमों को धारण किए रहते थे। और यहूदा
के पूरे घराने के पीछे गर्वनर रहा करते थे।
17 शहरपनाह के बनानेवाले और बोझ को
उठानेवाले, दोनों ही बोझ उठाते थे। वे लोग
एक हाथ से काम करते थे और दूसरे हाथ में
हथियार लिया करते थे। 18 राज अपनी जाँघ
पर तलवार लटकाए हुए अपना काम किया
करते थे। नरसिंगा फूँकनेवाला मेरे पास रहा
करता था। 19 इसलिए मैंने रईसों, गर्वनरों
और दूसरे लोगों से कहा, ”काम तो बहुत
है और हम शहरपनाह पर अलग-अलग एक
दूसरे से दूर रहते हैं। 20 इसलिए जिधर से
तुम नरसिंगा सुनो, उधर हमारे पास इकट्ठा हो
जाना। हमारे परमेश्वर हमारे लिए युद्ध करेंगे।
21 इस तरह हम काम में लगे रहे और उनमें
आधे सुबह-सुबह तारों के निकलने तक
बर्छियाँ लिए रहते थे। 22 फिर उसी समय मैंने
लोगों से यह भी कहा कि एक-एक आदमी
अपने दास के साथ यरूशलेम के अन्दर रात
बिताए, कि वे रात को हमारी रक्षा करें और
दिन में काम में लगे रहें। 23 मैं न तो अपने
कपड़े बदलता था, न मेरे भाई, न सेवक,
न पहरेदार जो मेरी सेना में थे, कपड़े बदला
करते थे। सभी लोग पानी के पास हथियार
लिए हुए जागते थे।

5 तब लोग और उनकी पत्नियों की ओर
से उनके भाई यहूदियों के खिलाफ़ बड़ी
चिल्लाहट मची। 2 दूसरे कुछ कहते थे, “हम
अपने बेटे-बेटियों के साथ बहुत लोग हैं।
इसलिए हमें अनाज मिलना चाहिए।” 3 कुछ
कहते थे, “हम अपने-अपने खेतों, अँगूर
के बगीचों और घरों को महँगाई के कारण
बन्धक रखते हैं, ताकि हमें अनाज मिले।
4 कुछ कहते थे, कि उन्होंने राजा के टॅक्स
के लिए अपने-अपने खेतों और अंगूर के
बगीचों पर रुपया उधार लिया। 5 लेकिन
हमारा और हमारे भाईयों की देह और हमारे
और उनके बाल-बच्चे एक बराबर हैं, फिर
भी हम बेटे-बेटियों को दास बनाते हैं। यहाँ
तक कि हमारी कोई-कोई बेटी गुलाम भी हो
चुकी है और हम असहाय महसूस कर रहे
हैं; क्योंकि हमारे खेत और अंगूर के बगीचे
दूसरों के हाथ पड़ चुके हैं। 6 इस चिल्लाहट
और इन बातों को सुनकर मुझे गुस्सा आया।
7 मैंने अपने मन में सोच विचारकर रईसों और
गर्वनरों पर गुस्सा किया और कहा, “तुम

लोग अपने भाई से ब्याज लिया करते हो।”
तब मैंने उनके खिलाफ़ एक बड़ी सभा की।
8 मैंने कहा, “अपनी ताकत पर हम लोगों ने
अपने यहूदी भाईयों को जो दूसरे देशों के
हाथ बिक चुके थे, कीमत देकर छुड़ाया;
फिर तुम क्या अपने भाईयों को बेचोगे? क्या
वे हमारे हाथ बिकेंगे?“तब वे खामोश रहे।
9 फिर मैं कहता गया, “जो काम तुम कर रहे
हो, वह ठीक नहीं है। क्या तुम्हें इस कारण
हमारे परमेश्वर का डर मानकर चलना नहीं
चाहिए; कि हमारे दुश्मन जो अन्यजाति है,
हमारी बदनामी करें। 10 मैं और मेरे भाई और
सेवक उनको पैसा और अनाज उधार देते हैं,
लेकिन हम उसका ब्याज छोड़ दें। 11 आज
ही उनको उनके खेत और अंगूर और जलपाई
के बगीचे और घर वापस लौटा दो; और
जो रुपया अनाज, नया दाखरस और टटका
तेल तुम उनसे लेते हो, उसका सौवां हिस्सा
वापस कर दो।” 12 तब वे बोले, “हम उन्हें
वापस कर देंगे और खुद कुछ नहीं लेंगे।
जैसा तुम कह रहे हो, वैसा ही करेंगे।” तब
मैंने पुरोहित को बुलाया और उनसे वायदा
करवाया कि वे इस तरह करेंगे। 13 तब मैंने
अपने कपड़ों के छोर को झाड़ते हुए कहा,
“इस तरह परमेश्वर हर इन्सान को जो अपने
वायदे को पूरा न करे, उसके घर और उसकी
दौलत से झाड़े और इस तरह वह झाड़ा जाए
और निकाल दिया जाए।” यह सुनकर सभा
के शब्द थे, “आमीन!” और उन सभी ने
याहवे की बड़ाई की। तब लोगों ने अपने
वायदे के हिसाब से काम किया। 14 जिस
दिन से मैं यहूदा के देश का राज्यपाल बनाया
गया, अर्थात अर्तक्षत्र राजा के बीसवें वर्ष से
लेकर उसके बत्तीसवें वर्ष तक अर्थात बारह
साल तक न मैंने और न ही मेरे रिश्तेदारों ने
राज्यपाल के अधिकार का अनाज खाया।
15 मेरे राज्यपाल बनने से पहले जो राज्यपाल
हुआ करते थे, वे लोगों पर बोझ बनते थे और
रोटी, दाखमधु और चालीस शेकेल चाँदी
लिया करते थे। उनके सेवक भी प्रजा पर भार
बना करते थे। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया,
क्योंकि मैं परमेश्वर की इच्छानुसार जी रहा
था। 16 और मैं भी शहरपनाह के काम में लग
गया। हमने ज़मीन नहीं खरीदी और मेरे सभी
सेवक काम करने के लिए वहाँ इकट्ठे हुआ
करते थे। 17 फिर उन लोगों के अलावा जो
चारों ओर के देशों से हमारे पास आए थे,
एक सौ पचास यहूदी और अधिकारी मेरे
साथ खाना खाया करते थे। 18 हर दिन जो
खाना बनता था, उसमें एक बैल और छः
बढ़िया किस्म की मेंढ़े और बकरियाँ और मेरे
लिए चिड़ियाँ भी बनाई जाती थी; दस दिन में
एक बार हर तरह का दाखमधु भी भरपूरी
से मुहैया कराया जाता था। इतना सब होने
पर भी मैंने राज्यपाल के हक का अनाज नहीं
वसूला, क्योंकि प्रजा के ऊपर पहले ही से
बोझ था। 19 मेरे परमेश्वर, जो कुछ मैंने इस
प्रजा के लिए किया है, उसी के अनुपात में
आप मुझे याद करें और मेरी भलाई करें।

6 जब सम्बल्लत, तोबिय्याह और अरबी
गेशेम तथा हमारे दूसरे सभी दुश्मनों
को मेरे बारे में वह खबर मिली, कि मैंने
शहरपनाह को बना लिया है। हाँ, उसमें कोई
दरार भी नहीं रही है। हालांकि उस समय तक
फाटक नहीं लगाए गए थे। 2 तभी सम्बल्लत
और गेशेम ने मुझे समाचार भिजवाया कि
मैं उनसे किसी गाँव में मिलूँ। लेकिन वे
मुझे नुकसान पहुँचाना चाह रहे थे। 3 इसलिए
समाचार लाने वालों को मैंने बताया कि
जाकर उनसे कहो कि मैं एक खास काम
में लगा हूँ और मैं अभी नहीं आ सकता।
4 उन लोगों ने मेरे पास चार बार यही संदेश

भेजा, लेकिन मेरा जवाब हर बार यही था।
5 तब सम्बल्लत ने अपने सेवक को खुली चिट्ठी
देकर, पाँचवी बार मेरे पास भेजा। 6 उसमें
लिखा था, "तमाम देशों में यह कहा जा
रहा है और गेशेम का भी यही कहना है कि
तुम और यहूदी बलवा करने पर उतारू हैं,
इसलिए तुम शहरपनाह को फिर से बना रहे
हो और इन समाचारों के अनुसार तुम उनके
राजा बनने की चाह रखते हो। 7 यह ऐलान
करने के लिए कि यहूदा में एक राजा हैं;
यरूशलेम में नबी ठहराए गए हैं। अब इन
समाचारों के आधार पर राजा तक खबर
पहुँचाई जाएगी। इसलिए आओ, हम सलाह
मश्विरा करें। 8 तब मैंने उसके पास यह कहला
भेजा, "जैसा तुम कह रहे हो, वैसा तो कुछ
भी नहीं हुआ, लेकिन तुम झूठ-झूठ यह सब
कह रहे हो।" 9 वे सभी यह सोचकर हमें
डराने की कोशिश कर रहे थे, कि ये सब
काम करने में आलसी हो जाएँ और काम
रुक जाए। लेकिन हे परमेश्वर, अब आप मेरे
हाथों को मजबूत करें। 10 मैं दलायाह के बेटे
और महेतबेल के पोते शमायाह के घर में
दाखिल हुआ। वह घर ही में बन्द था। उसने
कहा, "आओ, हम परमेश्वर के भवन अर्थात
मन्दिर में कुर्बानी करें और दरवाज़े बन्द करें;
क्योंकि वे तुम्हें मारने आएँगे।" 11 लेकिन मैं
बोला, "क्या मेरे जैसा इन्सान भाग खड़ा
हो जाए? और अपनी जान बचाने मन्दिर
में घुसे? मैं अन्दर नहीं जाऊँगा।" 12 तब मैं
जान गया कि ज़रूर, परमेश्वर ने उसे नहीं
भेजा है। लेकिन उसने अपनी भविष्यद्वाणी
मेरे खिलाफ़ इसलिए की थी कि सम्बल्लत
और तोबिय्याह ने उसे पैसा दिया था। 13 ऐसा
इसलिए कि मैं डर जाऊँ और ऐसा कुछ कर
डालूँ, कि हम गुनहगार ठहरते, जिससे उन्हें
तुम पर आरोप लगाने का मौका मिले और
वे मेरी बदनामी कर सकें। 14 हे मेरे परमेश्वर,
तोबिय्याह, सम्बल्लत और नोअद्याह नबिया
तथा दूसरे भविष्यद्वक्ताओं को जो मुझे डराना
चाह रहे थे, उनके कामों के अनुसार याद
रखें। 15 एलूल महीने के पच्चीसवें दिन को
अर्थात बावन दिनों के भीतर शहरपनाह
बनी। 16 जब हमारे सभी दुश्मनों ने यह बात
सुनी और हमारे चारों ओर रहने वाले लोगों
ने शहरपनाह देखी, तो उनकी हिम्मत जाती
रही। क्योंकि वे जान गए थे, कि यह काम
उनके परमेश्वर ही ने किया है। 17 उन दिनों
में यहूदा के अधिकारियों ने तोबिय्याह को
और तोबिय्याह ने उनको कई चिट्ठियाँ भेजी।
18 अनेक यहूदियों ने उसका साथ देने के
लिए प्रण किया था, कि क्योंकि वह आरह
के बेटे शकन्याह का दामाद था और उसके
बेटे यहोहानान ने बेरेक्याह के बेटे मशुल्लाम
की बेटी से विवाह किया था। 19 और वे मेरे
सामने उसके अच्छे कामों का वर्णन किया
करते थे और मेरी बातें भी उसे सुनाया करते
थे। तब तोबिय्याह ने मुझे डराने के लिए
चिट्ठियाँ भेजी।

7 शहरपनाह फिर से बन चुकने के
बाद मैंने फाटक लगाए और फिर
चौकीदार गवैये और लेवियों को काम
पर लगाया। 2 मैंने अपने भाई हनानी और
किले के अधिकारी हनन्याह को यरूशलेम
का अधिकारी बनाया, क्योंकि वह एक
ईमानदार इन्सान था। दूसरों के मुकाबले में
वह परमेश्वर से अधिक डरता था। 3 तब मैंने
उनसे कहा, "जब तक धूप तेज न हो जाए,
तब तक यरूशलेम के फाटक न खोले जाएँ
और पहरेदारों के पहरे पर रहते हुए फाटकों
को बेड़ें लगाकर बन्द किया जाए। यरूशलेम
में रहनेवालों में से भी तुम चौकीदारों को रखो
जो अपनी-अपनी जगह और अपने-अपने घर

के सामने पहरा दिया करे।” 4 नगर बड़ा था,
लेकिन लोग कम थे और घरों का निर्माण
नहीं हुआ था। 5 तब मेरे परमेश्वर ने मेरे
मन यह बात डाली कि रईसों, अधिकारियों
और लोगों को अपनी-अपनी वंशावली के
अनुसार गिने जाने के लिए इकट्ठा करूँ। मुझे
उन लोगों की वंशावली का रिकार्ड मिला,
जो पहले-पहले यरूशलेम वापस आए थे।
उस में यह सब लिखा हुआ था। : 6 इस
जिले के जिन लोगों को बेबिलोन का राजा
नबूकदनेस्सर गुलाम बनाकर ले गया था, उन
में से जो लोग गुलामी से छूटकर यरूशलेम
और यहूदा के अपने-अपने शहर को चले
गए, वे निम्नलिखित हैं। 7 वे जरूब्बाबेल,
येशू, नहेमायाह, अर्जयाह, राम्याह, नहमानी,
मोर्दकै, बिलशान, मिस्पेरेत, बिग्वै, नहूम
और बाना के साथ आए। इस्राएल की
प्रजा के लोगों की गिनती यह है: 8 परोश
- दो हजार एक सौ बहत्तर 9 सपन्याह -
तीन सौ बहत्तर 10 आरह - छः सौ बावन
11 पहत-मोआब - दो हजार आठ सौ अठारह
12 एलाम - एक हजार दो सौ चौवन 13 जत्तू -
आठ सौ पैतालीस 14 जक्कै - सात सौ साठ
15 बिन्नूई - छः सौ अडतालीस 16 बेबै - छः
सौ अट्ठाईस 17 अजगाद - दो हजार तीन
सौ बाईस 18 अदोनीकाम - छः सौ सड़सठ
19 बिग्वै - दो हजार सड़सठ 20 आदीन -
छः सौ पचपन 21 हिजकिय्याह की सन्तान
आतेर के वंश में से - अट्ठानवे 22 हाशम -
तीन सौ अट्ठाईस 23 बैसे - तीन सौ चौबीस
24 हारीप - एक सौ बारह 25 गिबोन - पचानवे
26 बेतलेहेम और नतोपा के मनुष्य - एक
सौ अट्ठासी 27 अनातोत के मनुष्य, एक सौ
अट्ठाईस 28 बेत-जमावत के लोग, बयालीस
29 किर्यत-यारीम, कपीर और बेरोत के मनुष्य
सात सौ तैतालीस 30 रामा और गेबा के
मनुष्य, छः सौ इक्कीस 31 मिकपास के मनुष्य,
एक सौ बाईस 32 बेतेल और ऐ के, एक
सौ तेईस 33 दूसरे नबो के बावन 34 दूसरे
एलाम की सन्तान, एक हजार दो सौ
चौवन 35 हारीम की औलाद, तीन सौ बीस
36 यरीहो के तीन सौ पैंतालीस 37 लोद हादीद
और ओनों के सात सौ इक्कीस 38 सना के
तीन हजार नौ सौ तीस 39 पुरोहित अर्थात
येशू के घराने में से यदायाह की सन्तान,
नौ सौ तिहत्तर 40 इम्मेर की सन्तान, एक
हजार बावन 41 पशहूर के एक हजार दो
सौ सैंतालीस 42 हारीम के एक हजार सत्रह
43 फिर लेवीय ये थेः अर्थात् होदवा के
वंश में से कदमीएल के घराने के येशू
की सन्तान चौहत्तर 44 आसाप की नस्ल में
से गवैये एक सौ अड़तालीस 45 द्वारपाल
- शल्लूम की सन्तान, आतेर की सन्तान,
तल्मोन की सन्तान, अक्कूब की सन्तान,
हतीता की सन्तान और शोबै की सन्तान,
एक सौ अड़तीस 46 फिर मन्दिर के सेवक
नतीन अर्थात सीहा सन्तान, हसूपा की
सन्तान, तब्बाओत की सन्तान 47 केरोस
की सन्तान, सीआ की सन्तान, पादोन की
सन्तान, 48 लबाना की सन्तान, हगावा की
सन्तान, शल्मै की सन्तान, 49 हानान की
सन्तान, गिद्देल की सन्तान, गहर की सन्तान,
50 राया की सन्तान, रसीन की सन्तान,
नकोदा की सन्तान, 51 गज्जाम की सन्तान,
उज्जा की सन्तान, पासेह की सन्तान, 52 बेसै
की सन्तान, मूनीम की सन्तान, नपूशस की
सन्तान, 53 बकबूक की सन्तान, हकूपा की
सन्तान, हर्हूर की सन्तान, 54 बसलीत की
सन्तान, महीदा की सन्तान, हर्शा की सन्तान,
55 बर्कोस की सन्तान, सीसरा की सन्तान,
तेमेह की सन्तान, 56 नसीह की सन्तान
और हतीपा की सन्तान 57 फिर सुलैमान

के कर्मचारियों की सन्तान, अर्थात सोतै
की सन्तान, सोपेरेत की सन्तान, परीदा
की सन्तान, 58 याला की सन्तान, दर्कोन
की सन्तान, गिद्देल की सन्तान, 59 शपत्याह
की सन्तान, हत्तील की सन्तान, पोकेरेत
सवायीम की सन्तान, और आमोन की
सन्तान 60 नतीन और सुलैमान के कर्मचारियों
की सन्तान मिलकर तीन सौ बानवे 61 ये
वे लोग हैं, जो तेलमेलह, तेलहर्शा, करुब,
अद्दोन और इम्मेर से यरूशलेम गए थे,
लेकिन वे अपने पूर्वजों के घराने और
वंशावली न बता सके, कि वे इस्राएल के
थे, या नहीं, 62 अर्थात दलायाह की सन्तान,
तोबिय्याह की सन्तान, और दकोदा की
सन्तान। ये सभी मिलाकर छः सौ बयालीस
थे। 63 और पुरोहितों में से होबायाह की
सन्तान, हक्कोस की सन्तान, और बर्जिल्लै की
सन्तान, जिसने गिलादी बर्जिल्लै की बेटियों
में से एक से विवाह किया और उन्हीं का
नाम रख लिया था। 64 इन्होंने अपने पूर्वजों
के पंजीकरण में अपना नाम ढूँढ़ा, लेकिन
कुछ जानकारी न मिली, इसलिए उन्हें अशुद्ध
जाना गया और पुरोहित पद से हटा दिया
गया। 65 और गर्वनर ने कहा कि वे परम
पवित्र चीज़ों में से कुछ न खाएँ, जब तक कि
ऊरीम और तुम्मीम धारण करने वाला कोई
पुरोहित न उठ खड़ा हो। 66 सारी मण्डली
के लोग मिलकर बयालीस हज़ार तीन सौ
साठ थे। 67 इन्हें छोड़ उसके सात हज़ार
तीन सौ सैंतीस दास-दासियों और दो सौ
पैंतालीस महिला-पुरुष गवैये थे। 68 उनके
सात सौ छत्तीस घोड़े, दो सौ पैंतालीस खच्चर
69 चार सौ पैंतीस ऊँट और छः हज़ार सात
सौ बीस गदहे थे। 70 और पूर्वजों के घराने के
कुछ खास आदमियों ने काम के लिए दिया।
राज्यपाल ने तो खजाने में एक हज़ार दर्कमोन
सोना, पचास कटोरे, और पुरोहितों के लिए
पाँच सौ तीस चोगे दिए। 71 और पूर्वजों के
घराने के कुछ मुख्य आदमियों ने उस काम
के कोष में बीस हज़ार दर्कमान सोना, और
दो हज़ार दो सौ मीना चाँदी दी। 72 और
प्रजा के बाकी लोगों ने बीस हज़ार दर्कमान
सोना, दो हज़ार माने चाँदी और पुरोहितों के
लिए सड़सठ चोगे दिए। 73 इस तरह पुरोहित,
लेवीय, द्वारपाल गवैये, प्रजा के कुछ लोग
और मन्दिर के सेवक और सभी इस्त्राएली
अपने-अपने नगरों में जाकर रहने लगे।

8 जब सातवाँ महीना निकट आया, उस
समय सब इस्त्राएली अपने अपने नगर
में थे। तब उन सब लोगों ने एक मन होकर,
जलफाटक के सामने के चौक में इकट्ठे
होकर, एज्रा शास्त्री से कहा, कि मूसा की
जो व्यवस्था याहवे ने इस्राएल को दी थी,
उसकी पुस्तक ले आ। 2 तब एज्रा पुरोहित
सातवें महीने के पहिले दिन को क्या स्त्री,
क्या पुरुष, जितने सुनकर समझ सकते थे,
उन सभों के सामने व्यवस्था को ले आया।
3 और वह उसकी बातें भोर से दो पहर
तक उस चौक के सामने जो जलफाटक
के सामने था, क्या स्त्री, क्या पुरुष और
सब समझने वालों को पढ़कर सुनाता रहा;
और लोग व्यवस्था की पुस्तक पर कान
लगाए रहे। 4 एज्रा शास्त्री काठ के एक मचान
पर जो इसी काम के लिए बना था, खडा
हो गया; और उसकी दाहिनी मत्तित्याह,
शेमा, अनायाह, ऊरिय्याह, हिल्किय्याह और
मासेयाह; और बाई अलंग पर, पदायाह,
मीशाएल ,मल्कियाह, हाशूम, हश्बद्दाना,
जकर्याह और मशुल्लाम खड़े हुए। 5 तब एज्रा
ने जो सब लोगों से ऊँचे पर था, सभों
के देखते उस पुस्तक को खोल दिया;
और जब उसने उसको खोला, तब सब

लोग उठ खड़े हुए। 6 तब एज्रा ने महान
परमेश्वर याहवे को धन्य कहा, और सब
लोगों ने अपने अपने हाथ उठाकर आमेन,
आमेन,कहा; और सिर झुकाकर अपना
अपना माथा भूमि पर टेक कर याहवे को
दण्डवत किया। 7 और येशू, बानी, शेरेब्याह,
यामीन, अक्कूब शब्बतै, होदिय्याह, मासेयाह,
कलीता, अजर्याह, योजाबाद, हानान, और
पलायाह नाम लेवीय, लोगों को व्यवस्था
समझाते गए, और लोग अपने अपने स्थान
पर खड़े रहे। 8 और उन्होने परमेश्वर की
व्यवस्था की पुस्तक से पढ़कर अर्थ समझा
दिया; और लोगों ने पाठ को समझ लिया।
9 तब नहेमायाह जो अधिपति था, और एज्रा
जो पुरोहित और शास्त्री था, और जो लोगों
को समझा रहे थे, उन्होने सब लोगों से कहा,
“आज का दिन तुम्हारे परमेश्वर याहवे के
लिए पवित्र है; इसलिए विलाप न करो और
न रोओ।” क्योंकि सब लोग व्यवस्था के
वचन सुनकर रोते रहे। 10 फिर उसने उनसे
कहा, कि जाकर चिकना चिकना भोजन
करो और मीठा मीठा रस पियो, और जिनके
लिए कुछ तैयार नहीं हुआ उनके पास बैना
भेजो; क्योंकि आज का दिन हमारे प्रभु के
लिए पवित्र है, और उदास मत रहो, क्योंकि
याहवे का आनंद तुम्हारा दृढ़ गढ़ है। 11 यों
लेवियों ने सब लोगों को यह कहकर चुप
करा दिया, कि चुप रहो क्योकि आज का
दिन पवित्र है; और उदास मत रहो। 12 तब
सब लोग खाने, पीने, बैना भेजने और बड़ा
आनंद मनाने को चले गए, क्योंकि जो वचन
उनको समझाए गए थे, उन्हें वे समझ गए
थे। 13 और दूसरे दिन को भी समस्त प्रजा के
पितरों के घराने के मुख्य मुख्य पुरुष और
पुरोहित और लेवीय लोग, एज्रा शास्त्री के
पास व्यवस्था के वचन ध्यान से सुनने के
लिए इकट्ठे हुए। 14 और उन्हे व्यवस्था में
यह लिखा हुआ मिला, कि याहवे ने मूसा से
यह आज्ञा दिलाई थी, कि इस्त्राएली सातवें
महीने के पर्व के समय झोपडियों में रहा
करें, 15 और अपने सब नगरों और यरूशलेम
में यह सुनाया और प्रचार किया जाए, कि
पहाड़ पर जाकर जलपाई, तैलवृक्ष, मेंहदी,
खजूर और घने घने वृक्षों की डालियां ले
आकर झोपड़ियाँ बनाओ, जैसे कि लिखा
है। 16 सो सब लोग बाहर जाकर डालियाँ
ले आए, और अपने अपने घर की छत पर,
और अपने आंगनों में,और परमेश्वर के भवन
के आंगनों में,और जलफाटक के चौक में,
और एप्रैम के फाटक के चौक में, झोपडियाँ
बना ली। 17 वरन सब मण्डली के लोग जितने
बन्धुआई से छूटकर लौट आए थे, झोपड़ियाँ
बनाकर उनमें टिके। नून के पुत्र यहोशू के
दिनों से लेकर उस दिन तक इस्राएलियों ने
ऐसा नही किया था। और उस समय बहुत
बड़ा आनंद हुआ। 18 फिर पहिले दिन से
पिछले दिन तक एज्रा ने प्रतिदिन परमेश्वर
की व्यवस्था की पुस्तक में से पढ़ पढ़कर
सुनाया। यों वे सात दिन तक पर्व मनाते रहे,
और आठवें दिन नियम के अनुसार महासभा
हुई।

9 जब सातवाँ महीना निकट आया, उस
समय सब इस्त्राएली अपने अपने नगर
में थे। तब उन सब लोगों ने एक मन होकर,
जलफाटक के सामने के चौक में इकट्ठे
होकर, एज्रा शास्त्री से कहा, कि मूसा की
जो व्यवस्था याहवे ने इस्राएल को दी थी,
उसकी पुस्तक ले आ। 2 तब एज्रा पुरोहित
सातवें महीने के पहिले दिन को क्या स्त्री,
क्या पुरुष, जितने सुनकर समझ सकते थे,
उन सभों के सामने व्यवस्था को ले आया।
3 और वह उसकी बातें भोर से दो पहर

तक उस चौक के सामने जो जलफाटक के सामने था, क्या स्त्री, क्या पुरुष और सब समझने वालों को पढ़कर सुनाता रहा; और लोग व्यवस्था की पुस्तक पर कान लगाए रहे। 4 एज्रा शास्त्री काठ के एक मचान पर जो इसी काम के लिए बना था, खडा हो गया; और उसकी दाहिनी मत्तित्याह, शेमा, अनायाह, ऊरिय्याह, हिल्किय्याह और मासेयाह; और बाई अलंग पर, पदायाह, मीशाएल ,मल्कियाह, हाशूम, हश्बद्दाना, जकर्याह और मशुल्लाम खड़े हुए। 5 तब एज्रा ने जो सब लोगो से ऊँचे पर था, सभों के देखते उस पुस्तक को खोल दिया; और जब उसने उसको खोला, तब सब लोग उठ खड़े हुए। 6 तब एज्रा ने महान परमेश्वर याहवे को धन्य कहा, और सब लोगों ने अपने अपने हाथ उठाकर आमेन, आमेन,कहा; और सिर झुकाकर अपना अपना माथा भूमि पर टेक कर याहवे को दण्डवत किया। 7 और येशू, बानी, शेरेब्याह, यामीन, अक्कूब शब्बतै, होदिय्याह, मासेयाह, कलीता, अजर्याह, योजाबाद, हानान, और पलायाह नाम लेवीय, लोगों को व्यवस्था समझाते गए, और लोग अपने अपने स्थान पर खड़े रहे। 8 और उन्होने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक से पढ़कर अर्थ समझा दिया; और लोगों ने पाठ को समझ लिया। 9 तब नहेमायाह जो अधिपति था, और एज्रा जो पुरोहित और शास्त्री था, और जो लोगों को समझा रहे थे, उन्होने सब लोगों से कहा, “आज का दिन तुम्हारे परमेश्वर याहवे के लिए पवित्र है; इसलिए विलाप न करो और न रोओ।” क्योंकि सब लोग व्यवस्था के वचन सुनकर रोते रहे। 10 फिर उसने उनसे कहा, कि जाकर चिकना चिकना भोजन करो और मीठा मीठा रस पियो, और जिनके लिए कुछ तैयार नहीं हुआ उनके पास बैना भेजो; क्योंकि आज का दिन हमारे प्रभु के लिए पवित्र है, और उदास मत रहो, क्योंकि याहवे का आनंद तुम्हारा दृढ़ गढ़ है। 11 यों लेवियों ने सब लोगों को यह कहकर चुप करा दिया, कि चुप रहो क्योकि आज का दिन पवित्र है; और उदास मत रहो। 12 तब सब लोग खाने, पीने, बैना भेजने और बड़ा आनंद मनाने को चले गए, क्योंकि जो वचन उनको समझाए गए थे, उन्हें वे समझ गए थे। 13 और दूसरे दिन को भी समस्त प्रजा के पितरों के घराने के मुख्य मुख्य पुरुष और पुरोहित और लेवीय लोग, एज्रा शास्त्री के पास व्यवस्था के वचन ध्यान से सुनने के लिए इकट्ठे हुए। 14 और उन्हे व्यवस्था में यह लिखा हुआ मिला, कि याहवे ने मूसा से यह आज्ञा दिलाई थी, कि इस्त्राएली सातवें महीने के पर्व के समय झोपडियों में रहा करें, 15 और अपने सब नगरों और यरूशलेम में यह सुनाया और प्रचार किया जाए, कि पहाड़ पर जाकर जलपाई, तैलवृक्ष, मेंहदी, खजूर और घने घने वृक्षों की डालियां ले आकर झोपड़ियाँ बनाओ, जैसे कि लिखा है। 16 सो सब लोग बाहर जाकर डालियाँ ले आए, और अपने अपने घर की छत पर, और अपने आंगनों में, और परमेश्वर के भवन के आंगनों में,और जलफाटक के चौक में, और एप्रैम के फाटक के चौक में, झोपडियाँ बना ली। 17 वरन सब मण्डली के लोग जितने बन्धुआई से छूटकर लौट आए थे, झोपड़ियाँ बनाकर उनमें टिके। नून के पुत्र यहोशू के दिनों से लेकर उस दिन तक इस्राएलियों ने ऐसा नही किया था। और उस समय बहुत बड़ा आनंद हुआ। 18 फिर पहिले दिन से पिछले दिन तक एज्रा ने प्रतिदिन परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में से पढ़ पढ़कर

सुनाया। यों वे सात दिन तक पर्व मनाते रहे,
और आठवें दिन नियम के अनुसार महासभा
हुई। 19 तब आप भी जो बहुत तरस से भरे
हैं, उनको ज़गल में न छोड़ा; न तो दिन में
मार्गदर्शन करनेवाला बादल का खम्भा उन
पर से हटा, और न रात को रोशनी देनेवा
और उनका रास्ता दिखानेवाला आग का
खम्भा। 20 वरन आप ने उन्हें समझाने के
लिए अपने आत्मा को जो भला है दिया,
और अपना मन्ना उन्हें खिलाना बन्द नहीं
किया, और उनकी प्यास बुझाने को पानी
देते रहे। 21 चालीस साल तक आप जंगल
में उनकी परवरिश करते रहे, कि उनको
किसी तरह की कमी न हुई। न ही उनके
कपड़े पुराने हुए और न ही उनके पैरों मे
सूजन आई। 22 फिर आपने राज्य-राज्य और
देश- देश के लोगों को उनके अधिकार में
कर दिया और दिशा-दिशा में उनको बाँट
दिया। बाद में वे हेशबोन के राजा सीहोन
और बाशान के राजा ओग दोनों के देशों
के अधिकारी हो गए। 23 फिर आपने उनकी
सन्तान को आसमान के तारों की तरह
बढ़ाकर उनहें उस देश में पहुँचाया, जिसके
बारे में आपने उनके पूर्वजों से वायदा किया
था। 24 इसलिए उन्होंने जाकर अधिकार कर
लिया। आपने उनके ज़रिये देश के रहवासी
कनानियों को दबाया। आपने राजाओं और
जनता सहित उनके सुपुर्द किया, कि वे जैसा
चाहें, करें। 25 उन्होंने गढ़वाले नगर और
फलदायक ज़मीन ले ली और सब तरह की
छ्छी चीज़ों से भरे हुए घरों के और खुदे हुए
हौदों के, और अंगूर और जलपाई के बगीचों
के,और खाने के फलवाले तमाम पेड़ों के
मालिक बन गए। वे उसे खा पीकर सन्तुष्ट
हो गए। उनका स्वास्थ्य अच्छा हो गया
और वे आपकी मदद के कारण सुखी हो
गए। 26 लेकिन वे आपसे दूर चले गए और
आपकी सिखायी बातों को भुला दिया और
आपके जो नबी उन्हें मुड़ने के लिये कहते
थे, उनकी जान ले ली और आपकी बेज़्ज़ती
की। 27 इसलिये आपने उन्हें उनके दुश्मनों
के सुपुर्द और उन्होंने उनको मुसीबत में डाल
दिया। लेकिन जब- जब वे आपको संकट के
समय में पुकारते थे, आप उनकी सुन लेते
थे। आप क्योंकि दयालु प्रभु हैं, छुड़ानेवाले
को भेजकर उनको आज़ाद किया करते थे।
28 सुख मिलने बाद वे बार- बार आप के
खिलाफ जाया करते थे, इसलिये आप फिर
उन्हें शत्रु के हाथों में कर देते थे और वे
उन पर अपना अधिकार जताने लगते थे,
लेकिन उनके दोहाई देने पर आप दयालु
होने के कारण उनको मुक्त करते थे। 29 इस
प्रकार आप चितौनी देते थे कि दिए गए
निर्देशों के मुताबिक जीवन बिताएँ। लेकिन वे
घमण्डी बने रहे और उलटी चाल चलते रहे।
वे ज़िद्दी होकर अपराध करते थे 30 औबहुत
वर्षों तक आप उनकी सहते रहे और नबियों
के द्वारा सावधान करत रहे, लेकिन वे सुनते
नहीं थे इसलिए आपने उन्हें देश- देश में
उन्हे फैला दिया। 31 तौभी आपने जो बहुत
दयालु हैं, उनका अन्त नहीं किया छर न
ही उनको छोड़ा, क्योंकि आप कृपालु और
अनुग्रहकारी हैं। 32 अब हे हमारे परमेश्वर,
आप ताकतवर हैं, अपने किये वायदे को पूरा
करते हैं, तरस खाते हैं।अश्शूर के राजाओं
के समय से जो पीड़ा हमारे अगुओं और
आम आदमी ने सही हैं, वह कम न समझी
जाए। 33 लेकिन इन सब बातों के बावजूद
आप न्यायी हैं। आपके सभी का अच्छे
हैं, हमारे काम ही सही नहीं हैं। 34 हमारे
राजाओं, हाकिमों, पुरोहितों और पूर्वजों ने
न ही आपकी शिक्षाओं को माना, न ही

चितौनियों पर ध्यान दिया। 35 उन्होंने अपने
राज्य में और अच्छे वक्त पर जो आपने
उन्हें दिया था, और इस फलवन्त देश में
आपकी सेवा नहीं की और न अपने बुरे कामों
से मुड़े। 36 देखिये, हम आजकल गुलाम हैं,
इस ज़मीन पर जो हमें आनन्द करने के लिए
दी गई थी। 37 यहाँ की पैदावार से राजाओं
को मोटी रकम मिला करती थी। वे हम पर
और हमारे जानवरों पर अधिकार जमाते थे।
38 इन सब बातों के कारण हम ईमानदारी
के साथ वाचा बान्धते और हमारे लेवीय,
पुरोहित और गवर्नर मोहर लगाते हैं।

10 जिन्हो ने छाप लगाई वे ये
हैं, अर्थात हकल्याह का बेटा
नहेमायाह जो अधिपति था, और
सिदकिय्याह; 2 सरायाह, अजर्याह,
यिर्मयाह; 3 पशहूर, अमर्याह, मल्किय्याह;
4 हत्तूश, शबन्याह, मल्लूक; 5 हारीम,
मरेयोत, ओबद्याह; 6 दानिय्येल, गिन्नतोन,
बारूक; 7 मशुल्लाम, अबिय्याह, मिय्यामीन;
8 माज्याह, बिलगै और शमायाह; ये ही तो
पुरोहित थे। 9 और लेवी ये थेः आजन्याह
का बेटा येशू, हेनादाद के बच्चों में से
बिन्नई और कदमीएल; 10 और उनके भाई
शबन्याह, होदिय्याह, कलीता, पलायाह,
हानान; 11 मीका, रहोब, हशब्याह; 12 जक्कूर,
शेरेब्याह, शबन्याह। 13 होदिय्याह, बानी
और बनीन; 14 फिर प्रजा के मुखिया ये थेः
परोश, पहत्मोआब, एलाम, जत्तू, बानी;
15 बुनी, अजगाद, बेबै; 16 अदोनिय्याह,
बिग्वै, आदीन; 17 आतेर, हिजकिय्याह,
अज्जूर; 18 होदिय्याह, हाशूम, बेसै;
19 हारीफ, अनातोत, नोबै; 20 मग्पीआश,
मशुल्लाम, हेजीर; 21 मशेजबेल, सादोक, यद्दू;
22 पलत्याह, हानान, अनायाह; 23 होशे,
हनन्याह, हश्शूब; 24 हल्लोहेश, पिल्हा,
शोबेक; 25 रहूम, हशब्ना, माशेयाह;
26 अहिय्याह, हानान, आनान; 27 मल्लूक,
हारीम और बाना। 28 बाकी लोग अर्थात
पुरोहित, लेवीय, द्वारपाल, गवैये और नतीन
लोग, कम से कम जितने लोग परमेश्वर
की व्यवस्था पालन करने के लिये देश
देश के लोगों से अलग हुए थे, उन सभों ने
अपनी पत्नियों और उन बेटें-बेटियों के साथ
जो समझ रखते थे, 29 अपने भाई रईसों से
मिलकर शपथ ली, कि हम परमेश्वर की
उस व्यवस्था का पालन करेंगे जो उनके
दास मूसा के द्वारा दी गई थी, और अपने
प्रभु याहवे की सब आज्ञाओं, नियमों और
विधियां को मानेंगे। 30 हम अपनी बेटियों
की शादी इस देश के लोगों से नहीं करेंगे
और न अपने बेटों के लिए उनकी बेटियाँ
शादी के लिए माँगेंगे। 31 और जब इस
देश के लोग विश्रामदिन को खाने-पीने की
और बेचने की चीजें ले आएँगे तब हम उन
से न विश्रामदिन को और न किसी पवित्र
दिन को कुछ लेंगे; और सातवें साल भूमि
खाली पड़ी रहने देंगे, और अपने अपने
कर्ज़ की वसूली छोड़ देंगे। 32 फिर हम
लोंगों ने ऐसा नियम बनाया जिस से हम
को अपने परमेश्वर के भवन की उपासना
के लिये एक एक तिहाई शेकेल देना पड़ेगा
: 33 अर्थात भेंट की रोटी और हमेशा के
अन्नबलि और हमेशा के होमबलि के लिये,
और विश्रामदिनों और नये चान्द और
ठहराए हुए पर्व्बो के बलिदानों और और
पवित्र भेटों और इस्राएल के प्रायश्चित्त के
निमित्त अपराधबलियों के लिये, उसी तरह
अपने परमेश्वर के भवन के सारे काम के
लिये यह रकम दी जाए। 34 फिर सभी लोगों
ने, अर्थात पुरोहित, लेवीय, और साधारण
लोगों ने इस बात के ठहराने के लिये

चिट्ठीयाँ डाली, कि अपने पूर्वजों के घरानों के अनुसार हर साल ठहराए हुए समय पर लकड़ी की भेंट व्यवस्था में लिखी हुई आज्ञा के अनुसार हम अपने परमेश्वर याहवे की वेदी पर जलाने के लिये अपने परमेश्वर के भवन में लाया करेंगे। 35 वैसे ही अपने खेत की पहिली फसल और सब प्रकार के पड़ों के पहिले फल हर साल याहवे के भवन में ले आएँगे। 36 और व्यवस्था में लिखी हुई आज्ञा के अनुसार अपने पहिले जन्मे बेटों और जानवरों, अर्थात पहिलौठे बछडों और मेम्नों को अपने परमेश्वर के भवन में उन पुरोहितो के पास लाया करेंगे, जो हमारे परमेश्वर के भवन में सेवा करते हैं। 37 वैसे ही अपना पहिला गूंधा हुआ आटा, और उठाई हुई भेटें और सब प्रकार के पेड़ों के फल, और अंगूर का नया रस, और टटका तेल, अपने परमेश्वर के भवन की भण्डारों में पुरोहितों के पास लाया करे। अपने खेत की उपज का दशमांश लेवियों के पास लाया करें; क्योंकि लेवीय ही हमारी खेती के सब नगरों में दशमांश लेते हैं। 38 और जब जब लेवीय दशमांश लें, तब तब उनके साथ हारून के घराने का कोई पुरोहित रहा करे; और लेवीय दशमांशां का दशमांश हमारे परमेश्वर के भवन के भण्डारों में लाया करेंगे। 39 क्योंकि जिन भण्डारों में पवित्र स्थान के बरतन रखें जाते हैं और सेवा करनेवाले पुरोहित, चौकीदार और गवैये रहते हैं; उनमें इस्त्राएली और लेवीय, अनाज, अंगूर का नया रस, और ताजे तेल की उठाई हुई भेटे लाएँगे। हम अपने परमेश्वर के भवन को नहीं छोड़ेंगे।

11 लोगों के मुखिया यरूशलेम में रहते थे, बाकी लोगों ने चिट्ठियाँ डालीं, कि दस पुरुषों में से एक जो पवित्र नगर यरूशलेम में रहने के लिए भेजा जाए और बाकी नौ नगरों में रहें। 2 तब लोगों ने उन सभी को आशीष दी जो यरूशलेम में रहना चाहते थे। 3 लेकिन यहूदा के नगरों में कुछ इस्त्राएली, अर्थात पुरोहित, लेवीय; मन्दिर के सेवक और सुलैमान के कर्मचारियों की बच्चे अपने ही नगर में अपनी खुद की ज़मीन पर रहते थे। प्रान्तों के कुछ खास अगुवे जो यरूशलेम में बस गए थे, उनके नाम इस तरह हैं; 4 यरूशलेम में कुछ यहूदी और बिन्यामिनी रहते थे। यहूदियों में से : येरेस वंशीय अतायाह जो उज्जिय्याह का बेटा था, वह जकर्याह का बेटा था, जो अमर्याह का बेटा, जो शपत्याह का बेटा था, जो महललेल का बेटा था; 5 और मासेयाह जो बारुक का बेटा था, जो कोलहोजे क बेटा, जो हजायाह का बेटा, जो अदायाह का बेटा, जो योयारीब का बेटा, जो जकर्याह का बेटा और जो शीलोई का बेटा था। 6 पेरेस के वंश के जो लोग यरुशलेम में टहा करते थे, सब मिलाकर चार सौ अड़सठ थे। 7 बिन्यामीनी वंश में से सल्लू जो मशुल्लाम का बेटा था, जो योएद का बेटा था, जो पदायाह का का बेटा था, जो कोलायाह का का बेटा था, जो मासेयाह का का बेटा था, जो इतीएह का का बेटा था, जो यशायाह का बेटा था। 8 और उसके बाद गब्बै और सल्लै थे और उनके साथ नौ सौ अट्ठाईस लोग थे। 9 इनका प्रधान जिक्री का बेटा योएल था, और हस्सनूआ का बेटा यहूदा नगर के प्रधान का नायब था। 10 फिर पुरोहितों में से योयारीब का बेटा यदायाह और याकीन। 11 और सरायाह जो परमेश्वर के भवन का मुखिया और हिल्किय्याह का बेटा था, यह मशुल्लाम का बेटा, यह सादोक का बेटा यह मरायोत का बेटा, यह अहीतूब का बेटा था। 12 इनके आठ सौ बाईस भाई

जो उस भवन का काम किया करते थे,
और अदायाह, जो यरोहाम का बेटा था, जो
पलल्याह का बेटा था, जो अम्सी का बेटा
था, जो जकर्याह का बेटा था, जो पशहूर
का बेटा था, जो मल्किय्याह का बेटा था।
13 इसके दो सौ बयालीस भाई थे जो पूर्वजों
के घरानों के अधिकारी थे; और अमशै जो
अजरेल का बेटा था, जो अहजै का बेटा, जो
मशिल्लेमोत का बेटा था, जो इम्मेर का बेटा
था। 14 इनके एक सौ अट्ठाईस वीर-बहादूर
भाई थे और उनका रखवाला हग्गदोलीम
का बेटा जब्दीएल था। 15 फिर लेवियों में
से शमायाह जो हश्शूब का बेटा था, जो
अज्रीकाम का बेटा, जो हुशब्याह का बेटा
था, जो कि बुन्नी का बेटा था। 16 शब्बत
और योजाबाद मुख्य लेवियों में से परमेश्वर
के भवन के बाहरी काम के लिए ठहराए
गए थे। 17 और मतन्याह जो मीका का बेटा
और जब्दी का पोता, और आसाप का
परपोता था, प्रार्थना में धन्यवाद करेनवालों
का प्रधान था। बकबुक्याह अपने भाइयों में
दूसरे पद पर था, और अब्दा जो शम्मू का
बेटा था, और गालाल का पोता, और यदूतून
का परपोता था। 18 जो लेवीय पवित्र नगर
में रहते थे, वे सब मिलाकर दो सौ चौरासी
थे। 19 और अक्कूब तल्मोन नाम पहरेदार और
उनके भाई जो फाटकों की देखरेख करते
थे, एक सौ बहत्तर थे। 20 बाकी इस्राएली
पुरोहित और लेवीय, यहूदा के सभी नगरों
में अपनी अपनी ज़मीन पर रहते थे। 21 और
नतीन लोग ओपेल में रहते थे। उनके ऊपर
सीहा और गिश्पा को नियुक्त किया गया था।
22 जो लेवीय यरूशलेम में रहकर परमेश्वर
के भवन के काम पर नियुक्त थे, उनका
प्रधान आसाप के वंश के गवैयो में से उज्जी
था, जो बानी का बेटा था। यह हशब्याह
का बेटा था, जो कि मतन्याह का बेटा था
और यह हशब्याह का बेटा था। 23 क्योंकि
उनके बारे में राजा का आदेश था कि गाने
वालों को रोज़ एक निश्चित हिस्सा दिया
जाए। 24 और लोगों के बारे में किए जाने
वाले सारे कामों के लिए यहूदा के बेटे जेरह
वंश के पतह्याह का बेटा मशेजबेल राजा
के पास रहता था। 25 गांवों और खेतों के
बारे में कहा जाए तो कुछ यहूदी किर्यतर्बा,
और उनके गांव में, कुछ दीबोन, और उसके
गांवों में, कुछ यकब्सेल और उसके गांवों
में रहते थे। 26 फिर येशू, मोलादा, बेत्पेलेत;
27 हसर्शूआल, और बेर्शेबा और उसके गांवों
में; 28 और सिकलग और मकोना और
उनके गांवों में; 29 एन्रिम्मोन, सोरा, यर्मूत,
30 जानोह और अदुल्लाम और उनके गांवों में,
लाकीश, और उसके खेतों में अजेका, और
उसके गांवों में वे बेर्शेबा से ले हिन्नोम की
तराई तक डेरे डाले हुए रहते थे। 31 और
बिन्यामीनी गेबा से लेकर मिकमश, अय्या
और बेतेल और उसके गांवों में, 32 अनातोत,
नोब, अनन्याह, 33 हासोर, रामा, गितैम,
34 हादीद, सबोईम, नबल्लत, 35 लोद, ओनो
और कारीगरों की तराई तक रहते थे। 36 और
कितने लेवियों के दल यहूदा और बिन्यामीन
के प्रान्तों में बस गए।

12 जो पुरोहित और लेवीय शालतीएल
के बेटे जरुब्बाबेल और येशू के
साथ यरूशलेम को गए थे, उनके नाम ये
हैं : सरायाह, यिर्मयाह, एज्रा, 2 अमर्याह,
मल्लूक, हत्तूश, 3 शकन्याह, रहूम,मरेमोत,
4 इद्दो,गिन्नतोई, अबिय्याह, 5 मीय्यामीन,
माद्याह, बिलगा, 6 शमायाह, योआरीब,
यदायाह, 7 सल्लू, आमोक, हिल्कियाह और
यदायाह। येशू के दिनों में पुरोहितों और
उनके भाइयों के खानदान से यही मुख्य

लोग थे। 8 फिर ये लेवीय थेः अर्थात येशू,
बिन्नूई, कदमीएल, शेरेब्याह, यहूदा और वह
मत्तन्याह जो अपने भाईयों के साथ धन्यवाद
के गीत गाने वाला अगुवा था। 9 उनके
भाई बकबुक्याह और उन्नो उनके सामने
खड़े रहकर अपनी सेवा किया करते थे।
10 येशू को योयाकीम हुआ और योयाकीम
को एल्याशीब और एल्याशीब को योयादा,
11 योयादा ने योनातान को जन्म दिया और
योनातान ने यद्दू को जन्म दिया। 12 योयाकीम
पुरेहित के समय में ये पुरोहित अपने अपने
खानदान में मुख्य थे, अर्थात शरायाह का
मरायाह; यिर्मयाह का हनन्याह। 13 एज्रा
का मशुल्लाम; अमर्याह का यहोहानान।
14 मल्लूकी का योनातान; शबन्याह का
योसेप। 15 हारीम का अदना; मरायोत का
हेलकै। 16 इद्दो का जकर्याह; गिन्नतोन का
मशुल्लाम। 17 अबिय्याह का जिक्री,मिन्यामीन
के मोअद्याह का पिलतै। 18 बिलगा का
शम्मू; शामायह का यहोनातान। 19 योयारीब
का मत्तनै; यदायाह का उज्जी। 20 सल्लै का
कल्लै; आमोक का एजेर। 21 हिल्किय्याह
का हशब्याह; और यादायाह का नतनेल।
22 एल्याशीब, योयादा, योहानान और यद्दू
के समय में जो लेवीय अपने पिता के
खानदान के मुख्य पुरुष थे उनके नाम, और
पुरोहितों के नाम भी फारसी राजा दारा के
राज्य में लिखें जाते थे। 23 जो लेवीय उनके
बापदादों के खानदान में मुख्य थे, उनके
नाम एल्याशीब के बेटे योहानान के दिनों
तक इतिहास की किताब में लिखे जाते रहे।
24 और लेवीय के मुख्य पुरुष ये थेः अर्थात
हसब्याह, शेरेब्याह और कदमीएल का बेटा
येशू। उनके सामने उनके भाई परमेश्वर के
भक्त दाऊद की आज्ञा के मुताबिक उनके
आमने तारीफ और धन्यवाद करने के लिए
ठहराए गए थे। 25 मत्तन्याह, बकबुक्याह,
ओबद्याह, मशुल्लाम, तल्मोन और अक्कूब
फाटकों के पास के भण्डारों के पहरेदार
थे। 26 योसादाक के पोता और येशू के
बेटे योयाकीम के समय में, और नहेमायाह
अधिपति और एज्रा पुरोहित और शास्त्री के
समय में ये ही थे। 27 यरूशलेम की दीवारों के
उद्घाटन के समय लेवीय को ढूँढ-ढूँढकर
यरूशलेम लाया गया ताकि वे खुशी के
साथ धन्यवाद करके और झांझ, सारंगी
और वीणा जैसे वाद्य बजाकर, और गीत
गाकर परमेश्वर की महिमा करें। 28 गानेवालों
के बेटे यरूशलेम के आसपास के स्थानों
से और नतोपातियों के गांवों से, 29 और
बेतगिलगाल से, और गेबा और अज्माबेत के
खेतों से आ पहुँचे। गाने वालों ने यरूशलेम
के आसपास अपने लिए गांव बसा लिए
थे। 30 तब पुरोहितों और लेवियों ने अपने
आप को शुद्ध किया; उन्होने लोगों को, तथा
फाटकों और दीवारों को भी शुद्ध किया।
31 फिर मैंने यहूदी अगुवों को दीवार पर
चढ़ा दिया, और धन्यवाद करने वालों को
दो बड़े दलों में बाँट दिया। इनमें से एक
दल तो दक्षिण ओंर, मतलब कूडाफाटक
की ओर दीवार के ऊपर से चल रहा था।
32 उसके पीछे पीछे ये लोग चल रहे थे,
अर्थात होशयाह और यहूदा के आधे अगुवे,
33 और अजर्याह, एज्रा, मशुल्लाम, 34 यहूदा,
बिन्यामीन, शमायाह,और यिर्मयाह, 35 और
पुरोहितों के कई बेटों के पास तुरहियां थीः
अर्थात जकर्याह जो योहानान का बेटा था,
यह शमायाह का बेटा, यह मत्तन्याह का
बेटा, यह मिकायाह का बेटा, यह जक्कूर का
बेटा, यह आसाप का बेटा था। 36 उसके
भाई शमायाह, अजरेल, मिललै, गिललै,
माऐ, नतनेल, यहूदा और हनानी परमेश्वर

के भक्त दाऊद के वाद्य को बजा रहे थे;
और उनके आगे आगे एज्रा शास्त्री चल
रहा था। 37 ये सोताफाटक से दाऊदपुर की
सीढी पर चढ़कर दीवारों पर चलते हुए,
दाऊद के भवन के ऊपर से होकर, पूरब
की ओर जलफाटक तक पहुँच गए। 38 और
धन्यवाद करने ते हुए चलनेवालों का दूसरा
दल भी जा रहा था, और उनके पीछे पीछे
मैं, और आधे लोग उनसे मिलने दीवर के
ऊपर से भट्ठों के गुम्मट के पास से चौडी
दीवार तक चलते रहे। 39 हम एप्रैम के
फाटक और पुराने, और मछलीफाटक, और
हननेल के गुम्मट, और हम्मेआ नाम गुम्मट
के पास से होकर भेड फाटक तक चले, और
पहरेदारों के फाटक के पास आ खडे हो गए।
40 तब धन्यवाद करनेवालों के दोनों दल
और मैं और मेरे साथ आधे अगुवे परमेश्वर
के मन्दिर में खडे हो गए। 41 एल्याकीम,
मासेयाह, मिन्यामीन, मीकायाह, एल्योएनै,
जकर्याह और हनन्याह नामक पुरोहितों के
पास तुरहियाँ थीं। 42 मासेयाह, शमायाह,
एलीआजर, उज्जी, यहोहानान, मल्किय्याह,
एलाम और एजेर और गीत गाने वाले जिनका
मुखिया यिज्रह्याह था, ऊँचे स्वर से गाकर
बजा रहे थे। 43 उसी दिन लोगों ने बड़े बड़े
मेलबलि चढ़ाए, और खुशियाँ मनाई, क्योंकि
परमेश्वर ने उनको बड़ी खुशी दी थी; महिलाएँ
और बच्चे भी खुशी मना रहे थे और यरूशलेम
के खुशियों का स्वर दूर दूर तक फैल गया।
44 उसी दिन उन्होंने खजानों के, उठाई हुई
भेटों के, पहिली उपज के, और दशमांशा
की कोठरियों के अधिकारी नियुक्त किए,
जिससे कि अलग-अलग नगरों के खेतों से
वस्तुओं को जमा करें, जो व्यवस्था के
अनुसार पुरोहितों और लेवियों का हिस्सा
थी; क्योंकि यहूदा के लोग सेवा करने वाले
पुरोहितों और लेवियों के कारण खुश थे।
45 इसलिये वे अपने परमेश्वर के काम और
शुद्धता के बारे में पूछताछ कर रहे थे; और
गवैये और पहरेदार भी दाऊद और उसके
बेटे सुलैमान की आज्ञा के अनुसार करते
रहे। 46 पुराने समय में, मतलब दाऊद और
आसाप के समय में तो गवैयों के मुखिया थे,
और परमेश्वर की तारीफ और धन्यवाद के
गीत गाए जाते थे। 47 और जरुब्बाबेल और
नहेमायाह के दिनों में सारे इस्त्राएली, गीत
गाने वाले और पहरेदारों के लिए रोज़ दान
दिया करते थे; और वे लेवियों के लिए हिस्सा
देते थे और लेवीय हारून के बच्चों के लिए
दान अलग रखते थे।

13 उसी दिन मूसा की पुस्तक लोगों
को पढ़कर सुनाई गई; और उस
में यह लिखा हुआ था, कि कोई अम्मोनी
वा मोआबी परमेश्वर की सभा में कभी न
आए; 2 क्योंकि उन्होंने भोजन और जल
देकर इस्राएलियों की सुधि नहीं ली, और
बिलाम को उन्हें शाप देने के लिये इनाम
देकर बुलवाया था लेकिन हमारे परमेश्वर
ने उस शाप को आशीष से बदल दिया।
3 यह बात सुनकर, उन्होंने इस्राएल में से
मिली जुली भीड़ को अलग अलग कर दिया।
4 इस से पहले एल्याशीब पुरोहित जो हमारे
परमेश्वर के भवन के भण्डार का अधिकारी
और तोबिय्याह का रिश्तेदार था, 5 उसने
तोबिय्याह के लिये एक बड़ी कोठरी तैयार
की थी जिसमें पहले अन्नबलि का सामान
और लोबान और बरतन और अनाज, नये
दाखमधु और टटका तेल के दशमांश, और
पुरोहितों के लिये उठाई हुई भेंट भी रखी
जाती थीं। इन्हें लेवियों, गवैयों और द्वारपालों
को देने की आज्ञा थी। 6 परंतु मैं इस समय
यरूशलेम में नहीं था, क्योंकि बाबेल के

राजा अर्तक्षत्र के बत्तीसवें वर्ष में मैं राजा
के पास चला गया। मैंने बहुत दिनों के बाद
राजा से छुट्टी माँगी, 7 जब मैं यरूशलेम को
आया, तब मुझे पता चला कि एल्याशीब
ने तोबिय्याह के लिये परमेश्वर के भवन के
आँगनों में एक कोठरी बना कर, बहुत बुरा
किया है। 8 इस बात का मुझे बहुत बुरा लगा,
और मैंने तोबिय्याह का सारा घरेलू सामान
उस कोठरी में से उठाकर फेंक दिया। 9 फिर
मैंने उनकोठरियों को शुद्ध करने की आज्ञा
दी, और परमेश्वर के भवन के बरतन और
अन्नबलि का सामान और लोबान उनमें फिर
से रखवा दिया। 10 फिर मुझे पता चला कि
लेवियों का भाग उन्हें नहीं दिया गया है; इस
वजह से काम करनेवाले लेवीय और गवैये
अपने अपने खेत को भाग गए थे। 11 तब
मैंने गवर्नरों को डाँटा और कहा, "परमेश्वर
का भवन क्यों छोड़ दिया गया है?" फिर
मैंने उनको इकट्ठा करके, हर एक को अपनी
अपनी जगह पर नियुक्त कर दिया। 12 तब से
सब यहूदी अनाज, नये अँगूरों का रस और
ताज़े तेल के दशमांश भण्डारों में लाने लगे।
13 और मैंने भण्डारों के अधिकारी शेलेम्याह
पुरोहित और सादोक मुंशी को, और लेवियों
में से पदायाह को, और उनके नीचे मत्तन्याह
का पोता और जक्कूर का बेटा हानान को
नियुक्त किया। उन्हें वफ़ादार समझा जाता था
और अपने भाइयों के बीच बँटवारा करना
उनका काम था। 14 हे मेरे परमेश्वर! मेरे इस
काम को मेरी भलाई के लिये याद करें, और
जो जो अच्छे काम मैंने अपने परमेश्वर के
भवन और उसमें की जाने वाली आराधना
लिए किए हैं उन्हें मिटा न डालें। 15 उन्हीं
दिनों में मैंने यहूदा में कई लोगों को देखा
जो विश्रामदिन को आदर नहीं देते थे; वे
हौदों में दाख रौंदते, और पूलियों को लाकर
गदहों पर लादते थे; वैसे ही वे दाखमधु,
दाख, अंजीर और अलग अलग तरह की
चीज़ें विश्रामदिन को यरूशलेम में लाते थे।
जिस दिन वे भोजनवस्तु बेच रहे थे, उसी दिन
मैंने उनको चेतावनी देकर समझाया। 16 सोर
के लोग भी वहाँ रहते थे और मछली तथा
अलग-अलग प्रकार की चीज़ें ले आकर,
विश्रामदिन के दिन यरूशलेम में यहूदियों
को बेचा करते थे। 17 तब मैंने यहूदा के
सरदारों को डांटकर कहा, "तुम लोग यह
क्या बुराई करते हो, सब्त को अपवित्र
करते हो? 18 क्या तुम्हारे पूर्वज भी ऐसा नहीं
करते थे? क्या हमारे परमेश्वर ने यह सारी
विपत्ति हम पर और इस नगर पर इसीलिए
नहीं भेजी? फिर भी तुम सब्त को अपवित्र
करके इस्राएल पर परमेश्वर के गुस्से को और
न्योता दे रहे हो। 19 इसलिए जब सब्त के
दिन से पहले तब यरूशलेम के फाटकों के
आस-पास अन्धेरा होने लगा, तब मैंने आज्ञा
दी, कि उनके फाटक बन्द किए जाएँ, और
सब्त के पूरे होने तक उन्हें खोला न जाए। मैंने
अपने कई सेवकों को फाटकों का अधिकारी
तय कर दिया कि सब्त के दिन कोई बोझ
भीतर आने न पाए। 20 इसलिये व्यापारियों
ने और अलग-अलग चीज़ें बेचनेवालां ने
एक या दो बार यरूशलेम के बाहर रात
गुज़ारी। 21 तब मैंने उनको डाँटकर कहा,
"तुम लोग शहरपनाह के सामने क्यों रात
बिताते हो? यदि तुम फिर ऐसा करोगे तो मैं
तुमको गिरफ्तार कर लूँगा।" उसके बाद वे
सब्त के दिन कभी नहीं आए। 22 फिर मैंने
लेवियों को आदेश दिया कि वे अपने अपने
को शुद्ध करके फाटकों की रखवाली करने
के लिये आया करें, ताकि सब्त को पवित्र
माना जाए। हे मेरे परमेश्वर! मेरी अच्छाई
के लिये यह भी याद रखें और अपनी बड़ी

करूणा के अनुसार मुझ पर कृपा कीजिए।
23 फिर मैंने पाया कि कुछ ऐसे यहूदी हैं,
जिन्होंने अशदोदी, अम्मोनी और मोआबी
स्त्रियों के साथ शादी कर ली है। 24 उनके
आधे बच्चे अशदोदी बोलते थे, और दूसरी
जातियों की बोली बोलते थे, लेकिन उन्हें
यहूदी बोलना नहीं आता था। 25 मैंने उनको
डांटा और उन्हें शाप दिया, और उन में से
कइयों की पिटाई भी की और उनके बाल
नुचवाए; और उनको परमेश्वर के नाम से
यह शपथ दिलाई, कि हम अपनी बेटियों
को उनके बेटों को शादी के लिए नहीं देंगे
और न अपने लिये या अपने बेटों के लिये
उनकी बेटियों को शादी में मांगेगे। 26 क्या
इस्राएल का राजा सुलैमान इसी अपराध में
न फँसा था? कई राष्ट्रों में उसकी बराबरी
का कोई राजा नहीं था जिससे परमेश्वर प्यार
करते थे, और परमेश्वर ने उसे सारे इस्राएल
का राजा बनाया था; लेकिन उसको भी
अन्यजाति स्त्रियों ने अपराध में फँसाया।
27 तो क्या हम तुम्हारे बारे में ऐसी बुराई
सुन सकते हैं कि तुम अन्यजाति स्त्रियों से
शादी करके, यह बुराई कर रहे हो और
अपने परमेश्वर के खिलाफ़ बेवफ़ाई कर रहे
हो? 28 और एल्याशीब महायाजक के बेटे
योयादा का एक बेटा, होरोनी सम्बल्लत का
दामाद था, इसलिये मैंने उसको अपने पास
से भगा दिया। 29 हे मेरे परमेश्वर, उन्हें याद
कीजिए कि उन्होंने याजकपद और याजकों
और लेवियों की वाचा का तोड़ा है। 30 इस
तरह मैंने उनको सब अन्यजातियों से शुद्ध
किया, और पुरोहितों और लेवियों को उनका
काम सौंप दिया। 31 वैसे ही मैंने लकड़ी की
भेंट और पहली उपज ले आने का खास समय
ठहरा दिया। हे मेरे परमेश्वर! मेरी भलाई के
लिये मुझे याद करें।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com